मुखपृष्ठ

साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 2, अंक 29, जनवरी(द्वितीय), 2018

मकर संक्रांति विशेष:

विज्ञान व धर्म को जोड़ने वाला

मोक्षदायी पर्व है मकर संक्रांति

घनश्याम बादल

मकर संक्रांति के पर्व का बखान कहां तक किया जाए यह एक अनोखा , व अनुपम पर्व है जो अमीरों को दान देने का , तो गरीबों को कुछ पाने का अवसर देता है । विज्ञान व धर्म को जोड़ता है , सूर्य की गति के आधार पर मनाया जाता है जबकि हिन्दू धर्म के दूसरे त्यौहार चंद्र कलाओं के आधार पर तय होते हैं कुल मिलाकर धर्म , विज्ञान , दान स्नान , पुण्य व मोक्ष पाने का अनूठा मिश्रण है मकर संक्रांति व का पर्व जिसके पीछे वैज्ञानिक व भौगोलिक कारणों के साथ ही अनेक पौराणिक कथाएं व मिथ भी जुड़े हैं । ।

मिथ व कथाएं:

कहते हैं कि महाभारत के युद्ध में अर्जुन के बाणों से घायल , भीष्म शरशैया पर पड़े थे और उनके प्राण निकलने वाले थे पर, चूंकि सूर्य उस समय दक्षिणायण था और हिंदू धर्म के मुताबिक इस स्थिति में मृत्यु होने पर मुक्ति नहीं मिलती , सो , भीष्म ने अपने तपोबल पर सूर्य के उत्तरायण होने तक प्राण नहीं त्यागे । सूर्य उत्तरायण होते ही मकर संक्रांति पर उन्होने प्राण त्याग मोक्ष प्राप्त किया । इसीलिये मकर संक्रांति को मोक्षदायी पर्व भी कहा जाता है ।

मान्यता यह भी है कि है कि आज के ही दिन भगवान विष्णु वामन के वेष में दैत्यराज राजा बलि का अभ्मिान तोड़ने कि लिए उनकी परीक्षा लेने गए थे । उन्होने बलि से तीन पग ज़मीन मांगी और उसके ‘‘हां’’ कह देने पर तीन कदम में उन्होने धरती व आकाश नाप लिए तथा पृथ्वी को दैत्य मुक्त करने के लिए वामन ने बलि को पाताल का राज्य दे दिया ।

पुण्य की संक्रांति:

आज के ही दिन दक्षिण में पोंगल मनता है , दक्षिण भारत में पोंगल का वही महत्व है जो उत्तरी भारत में दीवाली का है इस दिन वहां दीप जला कर रोषनी की जाती है व नावों की दौड़ भी आयोजित की जाती है ।

उत्तरी भारत में मकर संक्रांति के दिन लोग अपने पशुओं को भी विभिन्न रंगों से सजाते हैं । मकर संक्रांति के पर्व का बखान कहां तक किया जाए सचमुच ही ये अनोखा व अनुपम पर्व है जो अमीरों को दान देने का , तो गरीबों को कुछ पाने का अवसर दे जाता है । कुल मिलाकर दान स्नान ,पुण्य व विज्ञान का अनूठा मिश्रण है ये पर्व ।

सूर्य मकर राशि में

मकर संक्रांति का पर्व सूर्य के धनु राषि से मकर में प्रवेश करने पर मनाया जाता है । इस दिन से सूर्य दक्षिणायण से उत्तरायण हो जाता है जिससे उत्तरी गोलार्द्ध में षीत ऋतु का प्रकोप धीरे धीरे कम होना षुरु हो जाता है और स्वास्थ्य की दृ,ष्टिसे भी मौसम अनुकूल होने लगता है । भूगोल के नजरिए से देखें तो भारत में शीत ऋतु की विदाई की तैयारी आज से ही शुरु होती है ।

कहां कहां मनता है मकरसंक्राति:

राजस्थान , हरियाणा व गुजरात

मकर संक्रांति के दिन खास तौर पर राजस्थान व गुजरात में पतंगें बड़े ही जोर शोर से उड़ाई जाती हैं । ‘‘चील चील पुआ ले ’’के शोर से तो आसमान गूंजता ही है ‘‘वो मारा वो काटा ’’का शोर भी चारों तरफ सुनाई देता है ।

उत्तरप्रदेश :

पष्चिमी उत्तरप्रदेश में गंगा स्नान का खास जोर रहता है इस दिन हर की पौड़ी पर स्नान करने वालो को मुक्ति मिलने का भाव लाखों लोगो गंगा तट पर ले जाता है । ष्षायद तिलों के महंगे होने की वजह से या किसी और कारण से इस क्षेत्र में उड़द की काली दाल की खिचड़ी बनाने ,खाने व दान करने की परम्परा मिलती है । पूर्वी उत्तरप्रदेश में इलाहाबाद के संगम पर इस दिन भारी भीड़ उमड़ पडती हैं व एक तरफ मांगने वालों तो दूसरी तरफ दान करने वाले लोगों का हुजूम देखा जा सकता है । राजस्थानी व गुजराती लोग मालपुआ बनवा कर बांटते हैं ।

महाराष्ट्र:

महाराष्ट्र में मकर संक्रांति के दिन सुहागिन महिलाएं इकट्ठी होकर एक दूसरे को कुंकुम व हल्दी लगाती हैं तथा तिल व गुड़ भेंट करती हैं तथा हमेषा मीठे वचन बोलने की शपथ उठाती हैं हैं । रथ सप्तमी तक यह पर्व बड़े ही उत्साह से वहां मनाया जाता है ।

पोंगल व लोहड़ी का साथ:

एक दिन पूर्व ही 13 अप्रैल को पंजाब में लोहड़ी का पर्व भी जोशो खरोश के साथ सम्पन्न होता है जो नई फसल के आने की खुशी में मनाया जाता है । उधर तमिलनाडु में पोंगल का पर्व भी इसी समय व इसी उपलक्ष्य में मनाया जाता है ।

तिल - तिल बढ़ता है दिन:

कहा जाता है कि मकर संक्रांति से प्रत्येक दिन , दिनों दिन एक एक तिल बढ़ने लगता हैं । इस दिन तिल का खास महत्व होता है ,आज के दिन तिल के लड्डू बनाए जाते हैं , तिल का दान किया जाता हैं व व्यंजनों में खास तौर पर तिल के तेल का ही उपयोग करने की परम्परा है । आज के दिन को सूर्य की उपासना का पर्व माना जाता है और सूर्यनमस्कार करने से विशेष पुण्य की प्राप्ति होती बताई जाती है ।

सौरवर्ष वाला अकेला हिंदू पर्व:

दान , स्नान व सूर्य उपासनं के त्यौहार के रूप में मकर संक्रांति का पर्व एक ओर जहां भारत का ऐसा एकमात्र हिंदू पर्व है जो सौरवर्ष के आधार पर मनाया जाता है । ध्यान रहे कि बाकी सारे ही पर्व इस देश में चंद्र कलाओं के आधार पर मनाए जाते हैं । इसी वजह से अंग्रेजी महिनों में यें अलग अलग तिथियों को पड़ते हैं यहां तक कि कई बार तों इनके महिने तक बदल जाते हैं , पर मकर संक्रांति का पर्व हर बार 14 जनवरी को ही मनाया जाता है ।

संतान कामना का पर्व :

महिलाओं में इस पर्व के प्रति खास उत्साह देखा जाता है वें बड़ी उमंग के साथ आज के दिन व्रत , जप , तप , दान व धर्म के काम करती हैं और अपनी संतान के सुख समृद्धि , सुरक्षा व कल्याण की कामना करती हैं । कहा जाता है कि आज के ही माता यशोदा ने कृष्ण को पुत्र रूप में पाने के लिए व्रत किया था । पुत्र प्राप्ति की कामना के लिए भी मकर संक्रांति का पर्व अति शुभ माना जाता है ।

अस्तु , दान , पुण्य ,ज्ञान ,विज्ञान ,तिल ,खिचडी ,आस्था व विश्वास के इस पर्व को उमंग से मनाएं तो बहुत कुछ मिलेगा ।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें